स्कूलों को दोबारा खोलना | पुनरुत्थान का अवसर

टुलटुल बिस्वास

"मैडम जी, स्कूल कब खुलेगा?" ये सवाल बच्चे आए दिन उन सरकारी शिक्षकों से पूछते रहते हैं, जिनके साथ हम मध्य प्रदेश के छह ज़िलों में काम करते हैं। जब भी वे विद्यार्थियों को वर्कशीट्स और डिजिटल पाठ्यक्रम की तरक़्क़ी देखने के लिए बुलाते हैं, तब बार-बार यही गुहार सुनते हैं। ऐसा लगता है कि छोटे बच्चे (कक्षा 3, 4, 5 और 6) स्कूल जाने के लिए सबसे ज़्यादा तड़प रहे हैं। उन्हें शैक्षणिक विकास के साथ-साथ समाजीकरण के लिए उस स्थान और अन्य विद्यार्थियों से बातचीत की भी बहुत ज़रूरत है जो स्कूल उन्हें देता है।

चूँकि भारत के ज़्यादातर राज्यों में *कोविड-19* मरीज़ों की संख्या कम होने लगी है, कई राज्य लगभग डेढ़ साल बाद फिर से स्कूल और अन्य शिक्षा संस्थाओं को व्यक्तिश: कक्षाओं के लिए खोलने का ऐलान कर रहे हैं। मध्य प्रदेश, हरियाणा, छत्तीसगढ़ और दिल्ली जैसे कुछ राज्य तो नौवीं व उससे ऊपर की कक्षाओं में ऑफ़लाइन कक्षाओं के साथ प्रयोग करने भी लगे हैं। हरियाणा और छत्तीसगढ़ ने आने वाले हफ़्तों में प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के लिए भी स्कूल खोलने का ऐलान कर दिया है। लेकिन विडम्बना तो ये है कि ज़्यादातर राज्यों में कक्षा नौवीं और ऊपर के विद्यार्थियों को ऑफ़लाइन कक्षाओं के लिए स्कूल बुलाया जा रहा है, जबकि विशेषज्ञों की राय के अनुसार प्राथमिक स्तर के बच्चों को साक्षरता व संख्या-परिचय की मूलभूत ज़रूरतों को पूरा करने के लिए प्रत्यक्ष, आमने-सामने अन्तर्क्रिया की ज़रूरत है।

होशंगाबाद ज़िले के एक ब्लॉक शैक्षिक समन्वयक (बीएसी) ने हाल ही में छह-सात साल के बच्चों के बारे में चिन्ता व्यक्त की कि, चूँकि अभी औपचारिक स्कूली शिक्षा से उनका परिचय भी नहीं हुआ है, पिछले डेढ़ साल से वो इससे वंचित हैं तो स्कूल आने पर वे इस प्रणाली से कैसे तालमेल बना पाएँगे। एक प्राथमिक स्कूल शिक्षक ने भी यही बात दोहराई, "ये बच्चे तो घर से दूर जाकर सीखने के बारे में जानते ही नहीं हैं। तो जब ये स्कूल आएँगे, हम इन्हें उठना-बैठना सिखाएँ, पहली के पाठ पढ़ाएँ, दूसरी के या तीसरी के?"

ये पूरे राष्ट्र के लिए ध्यान देने योग्य और चिन्तनीय विषय बन गया है कि पहली से आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले जिन बच्चों को शिक्षा के अधिकार की सुरक्षा मिलनी चाहिए, उन्हें ही इस अप्रभावी ऑनलाइन शिक्षा की ओर धकेला जा रहा है। इसलिए एक तरफ़ हमें साथ आकर निचली कक्षाओं के लिए स्कूल खोलने की माँग करनी चाहिए और दूसरी तरफ़ रचनात्मक ढंग से यह योजना बनानी चाहिए कि फिर से खुलने और खुलने के बाद सुचारू रूप से चलने के लिए स्कूलों को क्या तैयारी करने की ज़रूरत है।

स्कूल खुलने की इन तैयारियों के मद्देनज़र मैं शिक्षा के कुछ आधारभूत दृष्टिकोणों को टटोलना चाहूँगी जो मौजूदा समय में और बाद में औपचारिक रूप से स्कूल खुलने पर भी हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं।

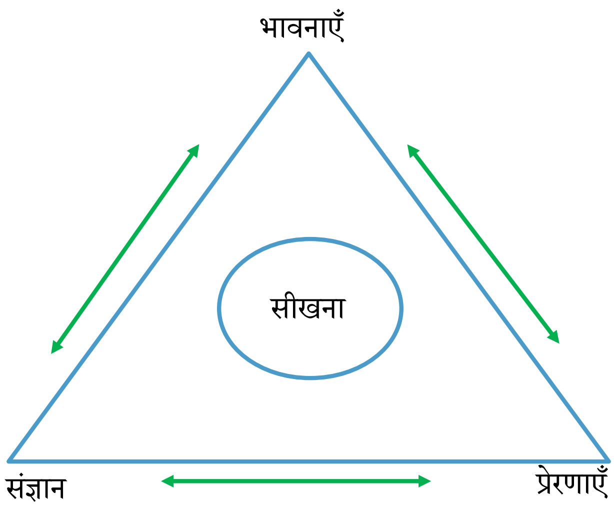
मुँह चिढ़ाता भावात्मक ज्ञानक्षेत्र

सीखना एक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और भावनात्मक (मनो-सामाजिक-भावात्मक) क्रिया है और हम उन्हीं लोगों से सबसे बेहतर सीखते हैं, जिनके साथ जुड़ाव और सुरक्षित महसूस करते हैं, यह बात हम सब जानते तो हैं परन्तु अक्सर भूल जाते हैं। मैंने सरकारी और प्राइवेट दोनों तरह के स्कूल शिक्षकों, निर्माणाधीन शिक्षकों और मैदानी स्तर के शिक्षा कार्यकर्ताओं के साथ कार्यशाला सत्रों में बार-बार उन भावनाओं को जानने की कोशिश की है जो बच्चे अपने प्रारम्भिक स्कूली जीवन में महसूस करते हैं। अभी मेरे पास पूरे देश के कई हिस्सों से लगभग 500 प्रतिभागियों का डेटा है और डर पूरे परिदृश्य पर छाया हुआ है — इशारा इस तथ्य की तरफ़ है कि डर वह भावना है जिसे प्रारम्भिक स्कूली जीवन में बच्चे सर्वाधिक महसूस करते हैं। आज समय है कि हम इसे बदलें और अपने विद्यार्थियों को एक ज़्यादा सकारात्मक, बाँधने वाला, भावनात्मक रूप से समर्थ बनाने वाला और शैक्षणिक रूप से चुनौतीपूर्ण वातावरण प्रदान करें।

कोविड-19 ने हमसे हमारे कई क़रीबी लोगों को छीन लिया और हमें झटके से ये भी एहसास करवा दिया कि जीवन में हम जिनसे जुड़ाव महसूस करते हैं, उनके साथ सकारात्मक सम्बन्ध बनाने चाहिए। और शिक्षकों के लिए इससे बेहतर क्या हो सकता है कि वे यह जुड़ाव विद्यार्थियों के साथ बनाएँ?

सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों के आँकड़े देखकर पता चलता है कि इनमें दलित और अनुसूचित जनजाति के बच्चों और

लड़कियों की प्रमुखता है। इसका मतलब है कि सरकारी स्कूलों में वे बच्चे पढ़ रहे हैं जिनके परिवार सबसे कठिन आर्थिक हालात का सामना कर रहे हैं। इसका मतलब यह भी है कि यह बच्चे सबसे अधिक भूखे होंगे, शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से, क्योंकि इनके माता-पिता अपनी दैनिक आजीविका चलाने के संघर्ष में फँसे हुए होंगे। इन बच्चों को कक्षा में किसी भी विषय पर ध्यान लगाने के लिए ज़रूरी होगा कि कक्षा के अधिकारी व्यक्ति यानी शिक्षक की स्वीकृति और मान्यता मिले। शिक्षक होने के नाते, सबसे अच्छा हम यही कर सकते हैं कि अपने विद्यार्थियों की इस ज़रूरत को समझें और उन्हें



एक स्वीकृतिपूर्ण और गर्मजोशी का माहौल दें। शुरुआत के लिए, हम कम-से-कम अपने पूर्वाग्रहों को पहचानकर, उनका विश्लेषण करके, उनके साथ तालमेल बना सकते हैं। दूसरा रचनात्मक क़दम इन पूर्वाग्रहों पर सवाल उठाना और अपने अन्दर उनके स्रोत ढूँढ़ने का होगा। इससे हम अपने विद्यार्थियों को और उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को बेहतर ढंग से स्वीकार कर पाएँगे और उनके साथ आपसी लगाव और स्नेह का रिश्ता बना पाएँगे।

भावात्मक ज्ञानक्षेत्र को इस चर्चा में शामिल करने का एक और महत्त्वपूर्ण आयाम यह समझना है कि सीखना कैसे भावनात्मक स्वास्थ्य से जुड़ा है और उस पर निर्भर भी है।

जैसा कि ऊपर दिए गए त्रिकोण से समझ आता है कि भावनाएँ, प्रेरणाएँ और संज्ञान तीनों आपस में जुड़े हुए हैं, एक-दूसरे पर इनका प्रभाव पड़ता है और यह एक साथ मिलकर सीखना सम्भव बनाते हैं। इसलिए सार्थक शिक्षण के लिए आवश्यक है कि हम विद्यार्थी की भावनात्मक स्थिति से जुड़ाव बनाएँ, वे जो भावनात्मक ऊर्जा लेकर आते हैं, अहमियत समझें और उसका इस्तेमाल एक प्रेरणादायक माहौल बनाने में करें जो संज्ञान को बढ़ावा दे।

शुरुआत के लिए, शिक्षक होने के नाते हमें यह समझना होगा कि हमें अपने विद्यार्थियों के साथ एक भावनात्मक जुड़ाव बनाना ही होगा। हमें ये स्वीकार करना होगा कि उनमें से कुछ को हम पसन्द करते हैं, कुछ को नापसन्द करते हैं और कुछ के तो विरुद्ध होते हैं। क्या हम इन्सान होने के नाते अपनी इन भावनाओं पर अंकुश लगा सकते हैं और उनके मूल कारण तक पहुँच सकते हैं, जो शायद हमारे अन्दर ही हों? क्या हम जो महसूस कर रहे हैं, उसे लेकर हम और सतर्कता और स्वीकृति का भाव ला सकते हैं, ताकि उसे हम अपने अन्दर ही सम्भाल सकें?

विद्यार्थियों के ज्ञान के आधार पर आगे बढ़ना

बीते साल में, 'लर्निंग गैप' और 'लर्निंग लॉस' जैसे शब्दों को लेकर बहुत शोरगुल हुआ है। इस 'लर्निंग गैप/ लॉस' का अध्ययन ज़रूरी है ताकि हम नीति-स्तर के बदलावों में मदद कर सकें और पाठ्यक्रम की छँटाई पर भी काम कर सकें, ताकि डेढ़-दो साल के बाद स्कूल आने पर बच्चे जिस कठिनाई का सामना करेंगे वह कम हो सके। लेकिन, क्या इन लॉकडाउन के महीनों में बच्चों को नए अनुभव नहीं मिले होंगे? क्या यह सम्भव नहीं कि अपनी छोटी उम्र में जीवन के रचनात्मक वर्षों में, जब वे इस महामारी, लॉकडाउन/ स्कूलबन्दी की स्थिति से गुज़र रहे थे, तब उन्होंने कुछ और दूसरी चीज़ें भी सीखी हों? शायद लचीलापन, धैर्य, कोई नया कौशल, कला या फिर इस महामारी की नई भाषा?

होशंगाबाद के हालिया दौरे पर, एक 8-9 साल की बच्ची ने मुझसे पूछा, "मैडम जी, लॉकडाउन और लॉक-अप में क्या फ़र्क़ होता है?" मैं जानती थी कि वह अँग्रेज़ी में इन-आउट, स्माल-बिग, अप-डाउन, थिन-फैट जैसे अवधारणात्मक शब्दों की छानबीन कर रही थी, लेकिन उसका अपनी अँग्रेज़ी शब्दों की छानबीन का इस्तेमाल करके अपने चारों तरफ़ होने वाली गतिविधियों के सिर-पैर समझने की इस कोशिश ने मुझे चकित कर दिया।

इस दौर में बच्चों ने जो अनुभव किया है, कक्षा में उस पर ध्यान देना और उसे समझना सार्थक साबित होगा। कुछ प्रश्न इसमें कारगर हो सकते हैं, जैसे उनके परिवारों को क्या हुआ, उनके माता-पिता के काम को क्या हुआ, उन्होंने खाने और राशन के लिए क्या किया, क्या वे अपने पड़ोसियों और दोस्तों से मिले, उन्होंने किस बारे में बातें कीं, क्या उनके परिवार में किसी को *कोविड-19* हुआ, उन्हें किस तरह की मेडिकल सहायता मिली और किसने इस दौरान उनकी मदद की आदि।

सूची तो अन्तहीन है और शिक्षक इसे अपने और बच्चों के रहन-सहन के अनुसार ढाल सकते हैं। यह शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच, बीते कुछ महीनों को लेकर बच्चों ने

जिन कठिनाइयों का सामना किया है, उनके बारे में संवाद का और बच्चे जिन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में रहते हैं उन्हें समझने का एक अच्छा तरीक़ा हो सकता है। शिक्षकों को बच्चों से बात करने, उनकी बात सुनने के लिए संवेदनशील बनाने से, पिछले वर्ष में उन्होंने जो जानकारी और ज्ञान हासिल किया, उसे समझने से (अ) एक सकारात्मक शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्ध स्थापित हो सकेंगे और (ब) बच्चे जो ज्ञान कक्षा में लाते हैं, उससे शिक्षा की एक मज़बूत बुनियाद बन सकेगी। इस सहानुभूतिपूर्ण और रचनात्मक नींव पर बेहतर शिक्षा होगी।

कक्षाओं में बैठने की व्यवस्था

शारीरिक दूरी हमारे 'नए सामान्य' का हिस्सा बन चुकी है। आने वाले कुछ समय तक, कक्षाओं में भी विद्यार्थियों को आपस में दूरी बनाकर बैठाया जाएगा। यह हमें कक्षा की कठोर संरचना को तोड़ने का और यह भी जाँच करने का मौक़ा देती है कि क्या बच्चों का एक के पीछे एक निष्क्रिय कतारों में बैठना सचमुच सीखने का अच्छा तरीक़ा है। हमें ख़ुद से ये प्रश्न पूछना चाहिए : किस तरह की बैठक व्यवस्था अधिक समावेशी और सहभागी शिक्षा को बढ़ावा देती है?

कोविड-19 की एक और वास्तविकता यह है कि हमें विद्यार्थियों को खेपों में बुलाना होगा। दूरस्थ सरकारी प्राथमिक स्कूलों में, दर्ज संख्या 20-80 के बीच कुछ भी हो सकती है। इसलिए, उन स्कूलों में जहाँ सिर्फ़ दो-तीन कमरे हैं, कुछ खुली जगहें हैं (जैसे बरामदे), बच्चों को उनकी क्षमता अनुसार समूहों में बाँटकर दूर-दूर गोलों में बिठाना कारगर होगा — एक ऐसी व्यवस्था जहाँ बच्चे एक-दूसरे को भी देख सकते हैं और शिक्षक को भी। जिन स्कूलों में दर्ज संख्या अधिक है और छोटी-छोटी टोलियों के लिए कक्षाओं या शिक्षकों की कमी है, उन्हें अलग-अलग खेप में बाँटकर हफ़्ते में अलग-अलग दिन बुलाना कारगर हो सकता है।

दोनों ही मामलों में, ये शिक्षक-केन्द्रित बैठक व्यवस्था को तोड़कर समावेशी गोलाकार बैठक व्यवस्था अपनाने का सही समय है — जहाँ विद्यार्थी हाथ भर की दूरी पर बैठें और फिर भी एक-दूसरे के आमने-सामने हों। यह हमजोली अन्तर्क्रिया को बढ़ावा देगी और शिक्षक-संचालित शिक्षण से ध्यान विद्यार्थियों और शिक्षकों की साझा परस्पर शिक्षा की तरफ़ लाएगी। एक और चीज़ जो सीखने की इस साझा और इंटरएक्टिव प्रक्रिया में मदद कर सकती है, वह है विद्यार्थियों को छोटे-छोटे समूहों में बाँटकर शिक्षक के निर्देशों के आधार पर उनसे गतिविधियाँ करवाना। जहाँ कमरे छोटे हैं और बड़े घेरों में बैठना सम्भव नहीं है, छोटे समूह बनाना एक तरीक़ा हो सकता है ताकि विद्यार्थियों के बीच परस्पर संवाद की भी सम्भावना हो और उनके बीच आवश्यक दूरी भी बनी रहे।

सीखने में पोषण और स्वास्थ्य की भूमिका

कोविड-19 ने हमें अपने और आसपास रह रहे लोगों के स्वास्थ्य पर ध्यान देना सिखा दिया है। इस अनुभव से सीखकर स्कूलों में भी पोषण और स्वास्थ्य सहायता की प्रणाली होनी चाहिए। प्रारम्भिक स्कूल पाठ्यचर्या में, अपने शरीर और उसके कार्यों को लेकर जागरूकता और बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल का ज़रूरी स्थान होना चाहिए। इस दिशा में एक और क़दम स्कूल परिसर में बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएँ मुहैया कराना हो सकता है।

फिर, बच्चों को संज्ञानात्मक कार्य के लिए तैयार करने में एक वक़्त के गर्मा-गर्म भोजन की अहम भूमिका तो हम जानते ही हैं जो उन्हें मिड-डे मील के रूप में मिलता है। अभी मिड-डे मील सिर्फ़ 6-14 साल के विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध है (और आँगनवाड़ी में 3-6 साल के बच्चों के लिए)। चूँकि सरकारी स्कूलों में भर्ती होने वाले विद्यार्थी समाज के वंचित तबक़ों से आते हैं, घर में खाना उपलब्ध हो, ये गारंटी भी नहीं होती। मध्य प्रदेश और कुछ अन्य राज्यों में कक्षा आठवीं तक और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में कक्षा 7 तक इस पोषण की कमी को मिड-डे मील द्वारा पूरा किया जाता है। अलबत्ता, छत्तीसगढ़ के शिक्षकों द्वारा किया गया एक अध्ययन साफ़ दर्शाता है कि मिड-डे मील को ऊपरी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए भी जारी रखने की ज़रूरत है। लेकिन जैसे ही विद्यार्थी उच्च कक्षा (आठवीं-नौवीं) में पहुँचता है मिड-डे मील सुविधा रुक जाती है, बावजूद इसके कि घर की परिस्थिति अब भी वही है। पोषण में इस कमी के कारण विद्यार्थी की पोषण स्थिति पर फ़र्क़ पड़ता है, जो कइयों को हल्के या मध्यम कुपोषण की तरफ़ धकेल देता है।

कोविड-19 की परिस्थिति और आजीविका ख़त्म हो जाने से यह स्थिति और भी विकट हो गई है। महामारी के चलते कई बच्चों को कई महीनों तक भूख या सामान्य से कम खाने में गुज़र-बसर करनी पड़ी है। इसलिए अब फिर से सारे विद्यार्थियों को गर्म मिड-डे मील मुहैया कराना एक ज़रूरी क़दम है।

शिक्षकों में तनाव पहचानना

महामारी के दौरान शिक्षक ख़ुद भी भारी तनाव में रहे हैं। मध्य प्रदेश व कुछ अन्य राज्यों में उन्हें क्वारेंटाइन और आइसोलेशन केन्द्र चलाने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई, सर्वे और टीकाकरण अभियान का, मोहल्लों में जाकर बच्चों को पढ़ाने का, घर-घर जाकर पाठ्यपुस्तक वितरण, राशन और वर्कशीट्स वितरण, अनाज मण्डियों में जाकर ख़रीदी का निरीक्षण, जैसे न जाने कितने काम उन्हें सौंपे गए। इन सब कामों की किसी ट्रेनिंग के बग़ैर, बिना पीपीई किट्स और बिना किसी अतिरिक्त इंश्योरेंस समर्थन के, कई शिक्षकों ने अपनी जान जोखिम में डाली है

और कुछ तो *कोविड-19* या फिर दूसरी तनाव-सम्बन्धित बीमारियों का शिकार हो गए और अपनी जान गँवा दी।

अपनी कार्य-क्षमता बढ़ाने के लिए डिजिटल तकनीकें सीखना और वर्चुअल माध्यम से अपने शिक्षण के उत्तरदायित्व पूरे करना इस तनाव को और बढ़ा रहा है। ऐसी स्थिति में ज़रूरी है कि शिक्षकों को बेहतर ढंग से तैयार किया जाए, शारीरिक रूप से भी और मानसिक रूप से भी, ताकि वो ऐसी गम्भीर परिस्थितियों में बाहर जाकर काम कर सकें। शिक्षकों को ऐसे तैयार किया जाना चाहिए कि वे अपनी भावनाएँ पहचान सकें, उन्हें स्वीकार कर सकें, सम्भाल सकें और तनाव दूर करने की दिशा में काम कर सकें।

होशंगाबाद ज़िले के सारे ब्लॉक्स में 'माइंडफुलनेस' के अभ्यास को लेकर कार्यशालाएँ आयोजित करने के हमारे प्रयास काफ़ी कारगर साबित हुए हैं — इन कार्यशालाओं में शिक्षकों को बस ख़ुद के साथ समय बिताने दिया जाता है और अपने चारों तरफ़ हो रही चीज़ों पर ध्यान देने कहा जाता है — आवाज़ें, दृश्य और स्पर्श से महसूस किए जाने वाले अनुभव। हमारी योजना (अ) ब्लॉक स्तर पर शिक्षकों के साथ और ऐसी कार्यशालाएँ करने की है और (ब) ऐसी गतिविधियाँ करने की है जो शिक्षक अपनी कक्षाओं में भी कर सकें ताकि विद्यार्थी भी अपने तनाव को दूर कर सकें।

टेक्नॉलॉजी का उपयोग

टेक्नॉलॉजी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है और रहने वाली है — स्कूलों में भी और फिर दैनिक जीवन के अन्य पहलुओं में भी। तो चाहे स्कूल के परिवेश में भी हो, ख़ासकर सरकारी प्राथमिक स्कूलों में, हमें ये तथ्य स्वीकार करना होगा कि डिजिटल शिक्षा सामग्री अधिकांश बच्चों की पहुँच से बाहर होती है और बहुत कम बच्चे इसके साथ सार्थक ढंग से जुड़ पाते हैं। तो हम इस 'नए सामान्य' को अनदेखा नहीं कर सकते। एक बच्चे के जीवन को प्रभावित करने वाली सरल प्रक्रियाओं के डिजिटलीकरण में कुछ तो फ़ायदा है — जैसे नवोदय विद्यालय का फॉर्म भरना या फिर छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करना।

मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में, एकलव्य फ़ाउण्डेशन के कई प्रयासों में से एक है समुदायों में कम लागत वाले रास्पबेरी-पाई (Raspberry-Pi) सेटअप्स का इस्तेमाल करना, कक्षा 5-8 तक के बच्चों को व्यक्तिगत लॉग-इन अकाउंट्स के साथ। विद्यार्थी इन केन्द्रों पर छोटे-छोटे समूहों में आकर www.teysu.in पर लॉग-इन कर कर सकते हैं। यह एक ऐसा प्लेटफार्म है जहाँ विद्यार्थी हिन्दी, अँग्रेज़ी और गणित में पहले से तैयार इंटरएक्टिव मॉड्यूल्स पर काम कर सकते हैं। इनको लेकर विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों की प्रतिक्रिया काफ़ी उत्साहजनक रही है। बच्चों को मॉड्यूल्स पर काम करने में मदद करने और सीखने के इस अनुभव से बढ़ती जिज्ञासा को सम्बोधित करने तथा खोजबीन में स्थानीय युवाओं और शिक्षकों ने बहुत योगदान दिया है।

संक्षेप में, टेक्नोलॉजी से मुँह मोड़ना या उस पर ध्यान न देना बीते कल की बातें हैं। अब समय है कि हम रचनात्मक ढंग से ये सोचें कि शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका को बरक़रार रखते हुए विद्यार्थियों को टेक्नॉलॉजी-कुशल कैसे किया जा सकता है। जैसे-जैसे स्कूल फिर से खुलने के लिए तैयार हो रहे हैं, तकनीकी उपकरणों को सुधारना व रखरखाव और मिले-जुले रूप से उनका इस्तेमाल करना शिक्षकों के लिए एक रणनीति हो सकती है उनके लिए और विद्यार्थियों के लिए फ़ायदे की होगी।

मूल्यांकन की पुनर्कल्पना

ऑनलाइन शिक्षा ने मूल्यांकन के उद्यम को छलावे में बदल दिया है। चूँकि ऑनलाइन मूल्यांकन के लिए सीधे उत्तर वाले प्रश्न उपयुक्त नहीं हैं, यही वक़्त है कि हम शिक्षकों के साथ काम करें और समझें कि सीखने का मूल्यांकन क्या है और ऐसी प्रणाली तैयार करें जो विद्यार्थियों की असल क्षमता का मूल्यांकन कर सके, ताकि यह देखा जा सके कि क्या विद्यार्थी किसी सिद्धान्त को समझते हैं और उसका इस्तेमाल किसी नई परिस्थिति में कर सकते हैं। इसका एक तरीक़ा है ओपन-बुक परीक्षा का और ऐसे प्रश्नपत्र तैयार करने का जो विद्यार्थी को सोचने पर, अलग-अलग जानकारियों को जोड़ने पर और जो कुछ उन्होंने सीखा है, उसका इस्तेमाल नई परिस्थिति में करने पर मजबूर करे।

लगभग डेढ़ साल बाद पूरे भारत के स्कूल खुलने की तैयारियाँ कर रहे हैं, ये ज़रूरी है कि हम इस अवसर का इस्तेमाल उन बदलावों को बड़े पैमाने पर लाने की कोशिश में करें जिन्हें नीति दस्तावेजों में प्रस्तावित किया गया है और छोटे पैमाने पर आज़माया गया है। अर्थात हमारे पास चुनौती को एक अवसर में बदलने का मौक़ा है। हम इसका पूरा फ़ायदा कैसे उठाते हैं और शिक्षा का पुनर्जागरण करते हैं या नहीं इस बात पर निर्भर करेगा कि हम ग्लास को आधा ख़ाली मानते हैं या आधा भरा।

Endnotes

i More girls enrolled than boys in ages 4-8 years (ASER report). https://www.indiatoday.in/education-today/news/story/number-of-girls-getting-enrolled-in-govt-schools-more-than-boys-in-4-8-years-category-aser-report-1636731-2020-01-14

ii https://www.eklavya.in/pdfs/Sandarbh/Sandarbh_116/01-11_Malnutrition_Among_High_School_Tribal_Children.pdf



टुलटुल बिस्वास एकलव्य भोपाल के टीचर एजुकेशन, आउटरीच एंड एडवोकेसी प्रोग्राम के साथ काम करती हैं। इस टीम का हिस्सा होने के नाते, वे शिक्षकों और ज़मीनी स्तर के कार्यकर्ताओं के लिए नए शिक्षण अवसर, कार्यशालाएँ, छोटे कोर्सेज़ डिज़ाइन करने में लगी रहती हैं ताकि कक्षा की गतिविधियों में बदलाव ला सकें। उन्होंने रसायनशास्त्र और समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। लगभग तीन दशक से एकलव्य के साथ हैं और पहले वे एकलव्य की बाल पत्रिका चकमक के साथ काम कर रही थीं। लोक और शास्त्रीय संगीत में उनकी ख़ास रुचि है। उनसे tutltulbiswas@yahoo.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अनमोल जैन